किस्सा चूहों की सरकार का

सुनीता ठाकुर

सब ठीक चल रहा था। चूहा मस्ती से राज कर रहा था– खुद खाता औरों को खिलाता। प्रजा पर भूखमरी होती तो चेलों से दाने डलवा देता। तुम भी खुश हम भी खुश।

मगर राज में गिरगिटों की फौज़ भी पैंतरे बदल रही थी–चूहा बेफ्रिक– हरे-हरे दानों की हरियाली में चौंधिया गया।

होना वही था जो हुआ– गिरगिटों के रंग जम गए। चूहे की चौपाल पर सुखा गहराने लगा। चमचों ने चाल खेल दी– तख्ता पलटता देख चूहा

बौखला गया। उसकी गद्दी पर कोई और क्यों उसी का अपना बैठेगा। कुछ न सूझा– बच्चे छोटे थे। चुहिया का दिमाग खूब चलता। यह सब राजपाट उसी की अक्ल का कमाल था चूहा मानता था।

सो तख्ता पलटा नहीं– चुहिया बन गई रानी। पहले बात और थी– पर अब चूहा सलाखों के भीतर चुहिया सलाखों से ऊपर। बाजी हाथ में आई चुहिया ने ली अंगड़ाई। सारा आकाश अपना कल का राजा गुलाम बना। चूहा खिसिया गया– सोचा था चुहिया की आढ़ में खूब चुगेगा दाना, पर चुहिया थी उस्ताद– पूछती सब पर बताती कुछ नहीं। दिनों का फेर सालों का रासा बन गया। चुहिया की तूती बोल चली– घर भी अपना बाहर भी अपना, मर्जी अपनी काम अपना मन अपना जनता अपनी– थोड़ा-थोड़ा खाओ तो हाज़मा हमेशा दुरूस्त रहता है न। □